SET - A

CBSE X	**MT EDUCARE LTD.**	Marks : 80
	SUBJECT : **HINDI COURSE - B**	
	SEMI PRELIM - II	
Date :	**MODEL ANSWER PAPER**	Time : 3 hrs.

खण्ड: 'क'

A.1.

(क) डॉ. आम्बेडकर का यह दृढ़ मत था कि राजनीतिक गतिविधियाँ सामाजिक धरातल को पूरी तरह प्रभावित करने वाली होनी चाहिए । **2**

(ख) महात्मा गाँधी पर मुकदमा चलाया गया क्योंकि उन्हीं की प्रेरणा से १९२९ में विदेशी वस्त्रों की होली जलनी प्रारंभ हुई थी । उनपर एक रुपया जुर्माना लगाया गया । **2**

(ग) गोलमेज सम्मेलन की बात तत्कालीन वायसराय ने की । उन्होंने कहा कि वे भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे देंगे । इसका कोई सुफल न निकल सका । **2**

(घ) हिंदुस्तानी सेवा दल हर मास के अंतिम रविवार को राष्ट्रीय झंडा दिवस मनाता था । **1**

(ङ) शीर्षकः डॉ. आम्बेडकर और राजनीति । **1**

A.2.

(क) आदर्शों से आदर्श टकरा रहे हैं, विचारों से विचार टकरा रहे हैं । इस आपसी टकराहट के कारण धरती की मिस्मत फूट रही है । **2**

(ख) वैचारिक प्रगति के कारण सभ्यता डूबने जा रही है । आशय यह है कि आज संसार में विचारधाराओं और धर्मों की टक्कर के कारण पूरी मानव-जाति का संहार होने का खतरा मँडराने लगा है । **2**

(ग) 'मस्तिष्क जयी' होने का अर्थ है - कोमल भावनाओं की बजाय तर्क और बुद्धि से जीवन जीना । इसका दुष्परिणाम यह होता है कि तर्क से आपसी संघर्ष और अलगाव बढ़ते हैं । **2**

(घ) बौद्धिक प्रगति की हानियाँ । **1**

खण्ड: 'ख'

A.3.

(क) (i) संज्ञा पदबंध **1**

(ii) वह रोज मंदिर जाता रहता था । **1**

(ख) (i) वह आलसी था, इसलिए विफल हुआ । **1**

(ii) जो व्यक्ति स्वावलंबी होते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं । **1**

(iii) तुम्हारे कहने पर सब मान गए । **1**

A.4.		**1**
(क)	(i) प्रेम से आतुर - तत्पुरुष समास	**1**
	(ii) नीले रंग का अंबर - कर्मधारय समास	
(ख)	(i) त्रिभुवन - द्विगु समास	**1**
	(ii) आजीवन - अव्ययी भाव समास	**1**
A.5.		
(क)	(i) हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी उन्नति होना चाहिए ।	**1**
	(ii) क्या आपने पढ़ लिया है ?	**1**
	(iii) क्या आप आ सकेंगे ?	**1**
	(iv) प्रधानाचार्य ने अध्यापक को बुलाया ।	**1**
(ख)	भौंहे चढ़ाना - नाराज होना ।	**2**
	वाक्य - मेरी बातें सुनकर तुमने भौंहे क्यों चढ़ा ली ?	
	खण्ड: 'ग'	
A.6.		
(क)	'डेरा डालने' का आशय है– अपने रहने का स्थान बनाना । उसके लिए आवश्यक साजो-सामान जुटाना। कबूतरों के डेरा डालने का आशय है–अपने तथा बच्चों के लिए घोंसले बनाना । बच्चों के खाने-पीने के लिए सामग्री जुटाना ।	**2**
(ख)	चाय पीने के बाद लेखक को लगा जैसे दिमाग की रफ्तार धीरे - धीरे बंद हो गई । लेखक को लगा कि मानो वह अनंतकाल में जी रहा है । यहाँ तक कि सन्नाटा भी उसे सुनाई देने लगा । दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे । केवल वर्तमान क्षण सामने था । वह अनंतकाल जितना विस्तृत था ।	**2**
(ग)	ख्यूक्रिन लकड़ी-मिस्त्री है । वह अपना काम निपटाने के लिए काठगोदाम से लकड़ी लेने आया था । तभी एक आवारा घूमते कुत्ते ने अकारण उसकी उँगली काट खाई ।	**1**
A.7.	गांधीजी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे । उन्होंने आजीवन इसका पालन किया । असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक - कानून का भंग आदि आंदोलनों से गांधीजी की नेतृत्व क्षमता झलकती है । एक दुबला - पतला शरीर, पहनावे के रूप में सिर्फ एक धोती इसके बावजूद वे जिस तरफ चल पड़ते थे उस तरफ लोगों की भीड़ उमड़ पड़ती थी । यह सिर्फ एक अद्‌भुत नेतृत्व वाले व्यक्ति के लिए ही संभव था जिसने बिना हथियार के उपयोग के आजादी दिलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ।	**5**

	अथवा निश्चय ही वजीर अली एक जाँबाज अर्थात जान की बाजी लगा देने वाला सिपाही था । वह अंग्रेजों को खूब छका रहा था । वह अपनी जान की बाजी लगाकर अंग्रेजों के कैंप में घूस आया था । कर्नल तक उसे देखकर चकरा गए । उसे अपनी जान की परवाह नहीं थी । यदि वह पकड़ा जाता तो उसे मारा भी जा सकता था । वह निडर था, तभी तो कर्नल से दस कारतूस ले लेने में सफल रहा । कोई उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाया । वजीर अली इतना दिलेर था कि वह कंपनी की बटालियन के खेमे में ही नहीं आ पहुँचा, बल्कि उनके कर्नल पर ऐसा रौब गालिब किया कि उसके मुँह से भी वे शब्द निकले जो किसी शत्रु या अपराधी के लिए तो नहीं ही बोले जा सकते थे । इस प्रकार वजीर अली एक जाँबाज और दिलेर सिपाही था ।	5
A.8.		
(क)	कंपनी बाग में रखी तोप यह सीख देती है कि अन्यायी-अत्याचारी शासक का भी खात्मा हो जाता है । जिस प्रकार तोप का मुँह बंद हो जाता है, उसी प्रकार क्रूर शासक का आतंक भी कभी-न-कभी समाप्त हो जाता है ।	2
(ख)	मोती की लड़ियों में चमक और निरंतरता होती है । झरने में भी ये दोनों गुण होते हैं । झरने का जल मोती की भाँति चमकता है तथा निरंतर गतिशील रहता है । इस कारण उसकी तुलना मोती की लड़ियों से ठीक ही की गई है । दोनों प्रकाश में जगमगा उठते हैं । इस समानता के कारण भी यह तुलना मनोरम बन पडी है ।	2
(ग)	दीपक से प्रसन्नतापूर्वक जलने का आग्रह किया जा रहा है ताकि प्रियतम (परमात्मा) तक जाने का रास्ता आलोकित (प्रकाशित) हो जाए ।	1
A.9.	वर्षाऋतु में प्रकृति का वेश पल-पल बदलता रहता है । पर्वत मेखलाकार अर्थात् गोलाकार रुप लिए रहते हैं । उस पर हजारों फूल खिले रहते हैं । ये फूल मानो इसके नेत्र हैं । यह इन नेत्रों की सहायता से अपने पैरों तले तालाब के जल में अपने विशाल आकार को देखकर मुग्ध हो रहा है । वह बार-बार अपने रूप और आकार को देखता है, इससे उसकी मुग्धता का पता चलता है ।	5
	अथवा हमें प्रभु की शक्ति में भरोसा रखते हुए भी उससे सब कुछ कर देने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए । हमें अपने जीवन का संघर्ष स्वयं ही करना चाहिए । इसमें हमें कदम-कदम पर ईश्वर की सहायता नहीं लेनी चाहिए । ईश्वर से स्वास्थ्य, शक्ति एवं निर्भरता की कामना करना ही पर्याप्त है । ईश्वर हमें सिर्फ अपने कार्य को स्वयं करने की प्रेरणा दे। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि ईश्वर ही हमारे समस्त काम कर देंगे और हम केवल प्रार्थना करते रहेंगे । हमें अपने कष्टों	

	को दूर करने का स्वयं ही प्रयास करना चाहिए । अंत में हम ईश्वर से इतनी ही प्रार्थना करेंगे कि हमारा पौरुष बना रहे और हमारा विश्वास हिलना नहीं चाहिए ।	5
A.10.	विद्यार्थी का ज़हीन होना और परीक्षा पास करना इन दोनों में काफी अंतर है । परीक्षा में अच्छे अंक लाना या प्रथम स्थान प्राप्त करना काफी मेहनत का काम है । यह जरुरी नहीं हैं कि जो प्रथम स्थान प्राप्त करता है वह ज़हीन ही है । काफी कुछ मेहनत पर निर्भर करता है । परीक्षा में रटे-रटाए प्रश्नों के पढ़े होने पर भी औसत विद्यार्थी पास हो जाता है । भाग्य उसका अगर साथ दे दे तो वह अच्छे अंकों से भी उत्तीर्ण हो जाता है । मात्र परीक्षा पास करना जहीन होने का मापदंड नहीं है । विश्वनाथन आनंद इसके उदाहरण हैं । व्यक्ति अगर ज़हीन है तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रगति कर सकता है, जैसेः धीरूभाई अम्बानी, सचिन तेंदुलकर । कितने ही ऐसे उदाहरण हमें मिलते हैं कि शैक्षणिक योग्यता अच्छी खासी होने के बावजूद लोग मारे-मारे फिरते हैं । अतः ज़हीन होने का मापदण्ड मात्र परीक्षा पास करना नहीं है ।	5
	अथवा	
	मनुष्य के जीवन में स्कूली जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है । मुझे आज तक याद है जब मैं कक्षा आठवीं में पढ़ता था । पूरे दिन में आठ पीरियड होते थे । हमें हमेशा अंग्रेजी के पीरियड का इंतजार रहता था । हमारे अंग्रेजी के शिक्षक पढ़ाते समय तरह-तरह के उदाहरण दिया करते थे । उनके द्वारा दिए जाने वाले उदाहरण बड़े मजेदार होते थे । पढ़ाई के साथ-साथ हमारा मनोरंजन भी होता था । जिस दिन वे अनुपस्थित होते थे, वह दिन हमारे लिए बड़ा दुखदायी हो जाता था । हमारे पी.टी. के सर शरीर से बड़े मोटे थे लेकिन वे इसके विपरीत बड़े ही फुर्तीले थे । मेरे स्कूली जीवन का सबसे अविस्मरणीय क्षण वह है जब मैंने भाषण-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था । मुझे वह पुरस्कार मुख्य अतिथि मुकेश खन्ना के हाथों से मिला था । सारे शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ अभिभावकों की तरह व्यवहार करते थे अतः वे सब ऐसे पल हैं जो भुलाए नहीं जा सकते ।	5
	खण्ड: 'घ'	
A.11. (क)	**नौका - विहार**	
	इस शरद अवकाश को बिताने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ - धरती के स्वर्ग कश्मीर में । मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ कश्मीर की सैर को चल पड़ा । कश्मीर को प्रकृति ने एक-से एक सुंदर दृश्य प्रदान किए हैं ।	
	चाँदनी रात थी । झील की नीली दिखाई पड़ने वाली जलराशि पर रंग-बिरंगी बिजली के बल्बो की आकर्षक छाया मन को मोह रही थी । आस-पास तैरते शिकारों से आने वाली धीमी-धीमी आवाजें झील की शांति को भंग कर रही थीं । मुझे गुप्तजी की ये पंक्तियाँ स्मरण हो आईं ।	

'चारु चंद्र की चंचल किरणे खेल रही है, जल थल में । स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अंबर तल में' हमारी नाव मंथर गति से चल रही थी । पानी में छप-छप की मधुर ध्वनि हो रही थी । हमारी नाव जल पर तैर रही थी । यह नौका विहार मुझे आजीवन याद रहेगा । **5**

(ख)

व्यायाम का लाभ

प्रत्येक मानव सुख व आनंद की प्राप्ति चाहता है और दुख से बचाव । मानसिक सुख को प्राप्त करने का मुख्य साधन है दैहिक स्वस्थता । इसका सर्वोत्तम उपाय है - व्यायाम । हमारे पूर्वज कहा करते थे कि 'तंदुरुस्ती लाख नियामतों से भी अच्छी है ।' अतः पहला सुख नीरोग काया ही माना गया है । देह को नीरोग रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है ।

आलस्य मानव जीवन को शिथिल बना देता है । आलसी की बुद्धि का संबंध अंतरंग नसों व अवयवों से होता है । व्यायाम के बिना पाचन क्रिया ठीक से नहीं हो पाती है । व्यायाम नियमित व सीमित करना चाहिए । व्यायाम के साथ - साथ ब्रह्मचर्य पालन भी होना चाहिए । नियमित व्यायाम के लिए संयम की आवश्यकता होती है । **5**

(ग)

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है । ज्ञान ही मानव को शक्ति और आनंद प्रदान करता है । चरित्र निर्माण भी ज्ञान द्वारा ही संभव है । शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य ज्ञान माना गया है, किंतु यह उस समय दोषपूर्ण हो जाता है जब इसे शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य समझ लिया जाता है । इसका सांस्कृतिक उद्देश्य है, जाति की संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायता प्रदान करना, जिससे वर्तमान पीढ़ी सुसंस्कृत बन जाये, सभ्य हो जाये । शिक्षा का एक सामाजिक उद्देश्य भी है कि ऐसे नागरिक तैयार होने चाहिए जो समाज - कल्याण व राष्ट्र - कल्याण के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने को तैयार रहे ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शिक्षा के अनेक उद्देश्य हैं । किसी एक उद्देश्य को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मान बैठना उचित नहीं है । अंत में हम कह सकते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित एवं सम्यक व्यक्तित्व का विकास करना है । **5**

A.12.

(क) सेवा में,
अध्यक्ष महोदय
नगर निगम, जालंधर ।

विषय – खेलकूद के सामान हेतू पत्र ।

मान्यवर,

मैं आपका ध्यान जालंधर शहर में खेल कूद के सामान के अभाव की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ । यद्यपि जालंधर में खेलकूद के सामान खूब बनते हैं और दूसरे नगरों को खूब जाता

है, पर हम लोगों को यह सामान नगरपालिका की ओर से उपलब्ध नहीं कराया जाता । नागरिकों को नगरपालिका की तरफ से एक ही उत्तर मिलता है - धन का अभाव । हम जालंधर के खेल प्रेमी आपसे अनुरोध करते हैं कि खेल - सामग्री के लिए बजट में पर्याप्त धनराशि की व्यवस्था कराई जाए । इससे निर्धन और मध्य वर्ग के लोग भी खेल सकेंगे । आपकी अति कृपा होगी ।

धन्यवाद ।

भवदीय,

रामआसरे सिंह

दिनांक **5**

अथवा

सेवा में,

क्षेत्रीय अधिकारी

एन.डी.पी.एल.

नई दिल्ली ।

विषय – बिजली की अनियमितता के संदर्भ में ।

महोदय,

मैं आपका ध्यान बिजली की अनियमित स्थिति की ओर आकर्षित कराना चाहती हूँ ।

इन दिनों वार्षिक परीक्षाएँ चल रही हैं और सभी विद्यार्थी रात्रि को देर तक पढ़ाई करते हैं । इन्हीं दिनों बिजली बिना किसी पूर्व सूचना के चली जाती है । ऐसी स्थिति रात्रि में कई बार उत्पन्न हो रही है । इससे विद्यार्थियों की पढ़ाई में बहुत बाधा आ रही है । संभवतः आपके विभाग के कर्मचारियों का ध्यान हमारी असुविधा की ओर गया ही नहीं हैं ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मार्च के महीने में बिजली की सप्लाई को नियमित बनाने को सुनिश्चित करें, ताकि हम परीक्षा की तैयारी ठीक प्रकार से कर सकें । इस कृपा के लिए हम आपके आभारी रहेंगे ।

धन्यवाद ।

भवदीय,

क ख ग,

राम नगर ।

दिनांक ३ मार्च, २०१७ **5**

A.13.

खेल परिषद

डी.ए.वी. स्कूल

वाराणसी

हॉकी टीम का चयन

सूचना

हमारे विद्यालय की हॉकी टीम का चयन 15 सितम्बर, 2017 को शाम 5 बजे खेल के मैदान में होगा । जो खिलाड़ी टीम में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे चयन के लिए टी शर्ट और नेकर पहनकर ठीक समय पर पहुँचें । हॉकी और गेंद स्कूल की ओर से उपलब्ध कराई जाएगी ।

दिनांक : 10 सितम्बर, 2017

सूर्यप्रताप सिंह
सचिव, खेल परिषद **5**

अथवा

माडर्न स्कूल,
दिल्ली

सूचना

विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए सर्दियों की छुट्टियों में 26-27 दिसंबर को दिल्ली-भ्रमण का आयोजन किया जा रहा है । इसमें दिल्ली के सभी ऐतिहासिक और प्रसिद्ध स्थलों का भ्रमण कराया जाएगा । जो विद्यार्थी जाने के इच्छुक हैं वे अपने कक्षा-अध्यापक से संपर्क करें तथा 20 दिसंबर तक अपने नाम और राशि जमा करवा दें ।

दिनांक : 18.12.2017

प्राचार्य
(हस्ताक्षर) **5**

A.14.

बिरेंद्र – हलो सुधीर ! कैसे हो?
सुधीर – फाइन! तुम कैसे हो?
बिरेंद्र – बिल्कुल ठीक! सुनाओ, क्या करने का इरादा है?
सुधीर – इरादा तो अभी दो दिशाओं के बीच झूल रहा है ।
बिरेंद्र – कैसे?
सुधीर – यार कभी मन होता है आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी करूँ । कभी मन करता है पत्रकारिताको अपना लूँ ।
बिरेंद्र – वाह! भाई इरादे तो दोनों ही ऊँचे हैं ।
सुधीर – हाँ! सोचता हूँ, लक्ष्य तो ऊँचा होना चाहिए । जिसका लक्ष्य जितना ऊँचा होगा, उसका तीर उतना ऊँचा जाएगा ।
बिरेंद्र – लगता है, अभी-अभी विवेकानंद या स्वेट मार्टन की पुस्तक पढ़कर आ रहे हो ।

सुधीर – सच! इनका प्रभाव तो मुझ पर बहुत है! परंतु मैं मज़ाक नहीं कर रहा । मैं सीरियस हूँ ।

बिरेंद्र – तब तो बहुत अच्छा है । पर आई.ए.एस. परीक्षा पास करना कोई हँसी-खेल नहीं है ।

सुधीर – परंतु हँसी-खेल कर कौन रहा है? खूब मेहनत करेंगे । जब नाव जल में छोड़ दी, तूफान ही में मोड़ दी । दे दी चुनौती सिंधु कों, फिर पार क्या, मँझधार क्या ।

बिरेंद्र – क्या बात है! लगता है तु पत्रकारिता में फिट रहोगे । ऐसी जोशीली बातें तुम्हें लोकप्रिय बना देंगी ।

सुधीर – खैर, तुम बताओं! तुम क्या करने जा रहे हो?

बिरेंद्र – अपना तो वही पुराना इरादा है । आर्किटेक्ट बनने का । लोगों के घरों के नक्शे बनाऊँगा ।

सुधीर – बहुत सुंदर! पर तुम मेरे काम कभी न आ सकोगे ।

बिरेंद्र – क्यों?

सुधीर – भई, अगर आई.ए.एस. बना तो मकान सरकार देगी और अगर पत्रकार बना तो शायद भूखों मरना पड़े । सुना है, लेखकों की ज़िंदगी फटेहाल होती है ।

बिरेंद्र – भाई वे लेखक और होते हैं । डेमोक्रेसी में तो पत्रकारों की चाँदी ही चाँदी होती है ।

सुधीर – पर मैं चाँदी की चमक में खोने वाला नहीं ।

बिरेंद्र – यह तो समय बतलाएगा ।

सुधीर – चलो, उस वक्त को भी देखेंगे । फिलहाल तो चलते हैं । बॉय । **5**

अथवा

विजय – हलो सुरेखा! कैसी हो?

सुरेखा – ठीक हूँ! तू सुना ।

विजय – ठीक हूँ! आजकल एन.डी.ए. की तैयारी में लगा हूँ ।

सुरेखा – आखिर तू बनेगा फौज़ी ही ।

विजय – क्यों, क्या तुझे फौज़ी पसंद नहीं हैं ?

सुरेखा – नहीं रे। फौज़ियों से डर लगता है । लगता है, ये परदेशी हैं ।

विजय – और क्या ? हम दीवानों की क्या हस्ती है, आज यहाँ कल वहाँ चले
मस्ती का आलम साथ चले, हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

सुरेखा – यही तो बीमारी है फौज़ियों में । जब भी देखो, अपने में मस्त रहते हैं और चलने-जाने की बातें करते हैं । मुझे डर है–अभी तू कहेगा–अच्छा चल रहा हूँ ।

विजय – अरे नहीं। अच्छा तू बता, तू क्या तैयारी कर रही है?

सुरेखा – मुझे क्या बनना है? मेडीकल की तैयारी कर रही हूँ ।

विजय – तो डॉक्टर साहिबा बनेंगी । सच बताऊँ। मुझे डॉक्टरों से डर लगता है । लेडी डॉक्टर तो बिल्कुल नहीं भाती । कैसी तनी-तनी रहती हैं । लड़कियाँ और औरतें तो ऐसे ही अच्छी लगती हैं । उनका गंभीर रहना मुझे बिलकुल पसंद नहीं है ।

सुरेखा – ये सब तुम्हारे ढोंग हैं। अगर लड़कों को लेडी डॉक्टर पसंद न आती तो न सचिन तेंदुलकर लेडी डॉक्टर से शादी करता, न वीरेंद्र सहवाग ।

विजय – मुझे तो सचमुच इन दोनों पर दया आती है! दोनों आजकल रन नहीं बना रहे और बार-बार अस्पताल में इलाज़ करवाते फिर रहे हैं ।

सुरेखा – तो आए तो डॉक्टर के ही पास न! **5**

A.15.

इंजीनियर बनना हो या डॉक्टर
प्रवेश-परीक्षा
की सुनिश्चित तैयारी के लिए
प्रवेश लीजिए
'उत्कर्ष'
संस्थान में!

- गत 20 वर्षों से हज़ारों इंजीनियरों/डाक्टरों का प्रवेश-प्रशिक्षण ।
- लिखित सामग्री तथा नियमित परीक्षाओं की व्यवस्था ।
- योग्यतम प्रशिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन ।

संपर्क करें
35-R, कलानगर, बांद्रा, मुंबई ।
संपर्क : 09768343291

5

अथवा

खुल गया!

मोहन मोबाइल्स

खुल गया!

35, बड़ा बाज़ार, घंटाघर के सामने, जयपुर

खरीदिए

मोबाइल :

9829070303

मोबाइल ही मोबाइल

सैमसंग **सोनी** **ब्लैकबैरी** **टाटा** **रिलायंस**

सभी रेंजों में, सभी प्रकार के
नवीनतम मोबाइल सैट
न्यूनतम रेटों पर, ग्राहक-सेवा सुविधा के साथ 5

❖❖❖❖